'ऐलान गली ज़िंदा है' में सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन : एक अध्ययन

ताईबा आलम

प्रस्तावना-

चंद्रकांता का उपन्यास 'ऐलान गली ज़िंदा है' कश्मीर के सामाजिक जीवन को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण रचना है। उपन्यास का संसार किसी बड़े राजनीतिक या ऐतिहासिक आख्यान से निर्मित नहीं होता, बल्कि एक गली और उसमें रहने वाले सामान्य लोगों के जीवन से आकार लेता है। यही इसकी विशेषता है। ऐलान गली में रहने वाले लोग अपने छोटे-छोटे सुख-दुःख, पारिवारिक संबंधों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक परंपराओं और आपसी व्यवहार के माध्यम से एक ऐसा संसार रचते हैं जिसमें पूरा समाज दिखाई देने लगता है।

चंद्रकांता ने इस संसार को दूर खड़े होकर नहीं देखा है। उनके पात्रों की भाषा, उनके व्यवहार, उनके संबंध और उनकी भावनाएँ उन्हें हमारे आसपास के परिचित लोगों जैसा बनाती हैं। रत्नी के प्रति गली के लोगों का लगाव, उसके जाने पर पैदा हुआ खालीपन, धार्मिक भेद से ऊपर उठकर मनुष्य को देखने की दृष्टि और परंपराओं को लेकर नई पीढ़ी के प्रश्न। ये सभी प्रसंग उपन्यास के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष को समृद्ध करते हैं।

इस दृष्टि से 'ऐलान गली ज़िंदा है' में सामाजिक जीवन कोई अलग से आरोपित विषय नहीं है। वह पात्रों के जीवन में स्वाभाविक रूप से उपस्थित है। इसी कारण उपन्यास को पढ़ते हुए ऐलान गली धीरे-धीरे एक स्थान से आगे बढ़कर जीते-जागते सामाजिक संसार का रूप ले लेती है।

गली का आत्मीय एवं सामुदायिक जीवन

उपन्यास की सबसे पहली विशेषता ऐलान गली का सामुदायिक जीवन है। यहाँ रहने वाले लोग केवल पड़ोसी नहीं हैं। उनके बीच ऐसे संबंध बन गए हैं जिनमें सुख-

दुःख, हँसी-मजाक, शिकायत और अपनापन सब शामिल हैं। किसी एक व्यक्ति की व्यक्तिगत घटना भी धीरे-धीरे पूरी गली की घटना बन जाती है।

रत्नी के गली छोड़कर जाने का प्रसंग इसका सुंदर उदाहरण है। अवतारे का रत्नी से कहना- "रत्नी भाभी, यों गली छोड़कर हमें दगा दे रही हो, तो यह मत समझो हमसे छुटकारा पाओगी... हम उधर मिलने आया करेंगे।"

इस कथन में केवल विदाई की औपचारिकता नहीं है। "हमें दगा दे रही हो" जैसे शब्दों में शिकायत भी है और गहरा अपनापन भी। अवतारे रत्नी के जाने को केवल उसके व्यक्तिगत निर्णय के रूप में स्वीकार नहीं करती; उसे लगता है कि रत्नी के जाने से गली का अपना कोई हिस्सा उससे दूर हो रहा है।

यही बात ऐलान गली के सामुदायिक जीवन को विशेष बनाती है। यहाँ संबंध किसी औपचारिक सामाजिक व्यवस्था के कारण नहीं बने हैं। लंबे समय तक साथ रहने, एक-दूसरे को देखने, एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होने और रोज़मर्रा के जीवन को साझा करने से ये रिश्ते बने हैं।

रत्नी के जाने के बाद उसकी स्मृतियाँ जिस तरह पूरी गली में बनी रहती हैं, उससे यह सामुदायिकता और स्पष्ट हो जाती है- रत्नी के बाद भी रत्नी के ठहाके गली में गूँजेंगे, रत्नी के मज़ाक, रत्नी की दो टुक बात।"

यहाँ "ठहाके", "मज़ाक" और "दो टुक बातें" जैसे शब्द रत्नी के चरित्र को किसी गंभीर परिचय से अधिक प्रभावशाली ढंग से सामने लाते हैं। पाठक को लगता है कि वह रत्नी को सचमुच गली में बोलते और हँसते हुए देख सकता है।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि किसी व्यक्ति का वास्तविक अस्तित्व केवल उसके शरीर की उपस्थिति से नहीं होता। उसके व्यवहार और स्मृतियाँ भी उसे जीवित रखती हैं। रत्नी के जाने के बाद भी उसकी आवाज़ और हँसी गली के लोगों के

जीवन का हिस्सा बनी रहती है। इस अर्थ में ऐलान गली एक सामूहिक स्मृति का स्थान भी बन जाती है।

स्त्री-जीवन और सामाजिक अपेक्षाएँ-

उपन्यास में स्त्री-जीवन का चित्रण केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है। स्त्री की इच्छाएँ, उसकी भावनाएँ, विवाह संबंधी निर्णय और परिवार की अपेक्षाएँ- इन सबका आपसी संबंध दिखाई देता है।

मास्टरजी की बेटी के प्रसंग में प्रेम और विवाह के बीच का तनाव सामने आता है-

“मास्टरजी को गवारा होता? सोचा, किसी लायक लड़के से शादी करेंगे तो सबकुछ भूल-भालकर गृहस्थी में रम-बस जाएगी, जैसा अक्सर लड़कियों के साथ होता है ।”

इस कथन में परिवार की सोच स्पष्ट होती है। लड़की के भविष्य को परिवार अपनी सामाजिक समझ और अपनी पसंद के अनुसार निर्धारित करना चाहता है। दूसरी ओर लड़की की अपनी भावनात्मक दुनिया भी है, जिसे केवल विवाह कर देने से समाप्त नहीं किया जा सकता। यहाँ चंद्रकांता किसी एक पक्ष को बिल्कुल सही और दूसरे को बिल्कुल गलत घोषित नहीं करतीं। वे उस सामाजिक स्थिति को सामने रखती हैं जहाँ परिवार की चिंता, सामाजिक प्रतिष्ठा और लड़की की व्यक्तिगत भावनाएँ एक-दूसरे से टकराती हैं। यही कारण है कि यह प्रसंग आज भी पाठक को सहज रूप से समझ में आता है। इसमें कोई कृत्रिम विचारधारात्मक भाषण नहीं है; एक सामान्य परिवार के भीतर पैदा होने वाला तनाव है।

स्त्री का अकेलापन और मातृत्व-

लच्छी काकी का प्रसंग स्त्री के जीवन के एक दूसरे पक्ष को सामने लाता है। यहाँ स्त्री की समस्या विवाह या प्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके भीतर का अकेलापन भी दिखाई देता है।

“लच्छी काकी को अपनी कोख का सूनापन तो सालता ही था।” “कोख का सूनापन” केवल संतान न होने की स्थिति को नहीं बताता। इसके पीछे समाज द्वारा स्त्री के मातृत्व को उसके जीवन की सफलता से जोड़ने वाली मानसिकता भी दिखाई देती है। लेकिन लेखिका लच्छी काकी को केवल दुखी स्त्री बनाकर नहीं छोड़तीं। गली के बच्चों के साथ उसका संबंध उसके जीवन में एक अलग तरह का अपनापन पैदा करता है। इस प्रकार सामुदायिक जीवन उसके व्यक्तिगत खालीपन को कुछ हद तक भरता है।

यह प्रसंग बताता है कि स्त्री का जीवन केवल जैविक मातृत्व से निर्धारित नहीं होता। उसके भीतर प्रेम, स्नेह और देखभाल की भावनाएँ हैं जिन्हें वह सामाजिक संबंधों के माध्यम से भी व्यक्त कर सकती है।

प्रकृति, बर्फ और लोक-संस्कृति

कश्मीर का प्राकृतिक परिवेश उपन्यास के सामाजिक जीवन से अलग नहीं है। बर्फ केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि वहाँ के लोगों के जीवन और भावनाओं का हिस्सा है। “वर्ष की पहली यों जो नई खुशियाँ लेकर आती।”

पहली बर्फ का स्वागत केवल मौसम के बदलने के रूप में नहीं किया जाता। उसके साथ नई उम्मीद और खुशी जुड़ी हुई है। यहाँ प्रकृति और मनुष्य के बीच एक आत्मीय संबंध दिखाई देता है। कश्मीर की बर्फ, मौसम और परिवेश वहाँ रहने वाले लोगों की स्मृतियों और सामूहिक अनुभवों का हिस्सा हैं। इससे उपन्यास की क्षेत्रीयता भी मजबूत होती है। पाठक को केवल यह नहीं बताया जाता कि कहानी कश्मीर में है, बल्कि कश्मीरी जीवन की अनुभूति कराई जाती है।

संस्कार, लोकविश्वास और सामाजिक परंपरा-

उपन्यास में संस्कारों का संबंध केवल धार्मिक कर्मकांड से नहीं है। वे परिवार और समाज को जोड़ने वाली परंपरा के रूप में दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में कहा गया है-

“संस्कारों से ही वंश चलते हैं, जाति चलती है, खानदान बनते हैं, आपस में प्रेम और रीति-नीति का ज्ञान बढ़ता है।”

इस कथन में संस्कारों को सामाजिक निरंतरता से जोड़ा गया है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक केवल संपत्ति या नाम नहीं जाता, बल्कि व्यवहार, रीति-रिवाज, मान्यताएँ और सामाजिक मूल्य भी पहुँचते हैं। इसीलिए संस्कार व्यक्ति को उसके परिवार और समुदाय से जोड़ते हैं। लेकिन उपन्यास का दृष्टिकोण केवल परंपरा को स्वीकार करने वाला नहीं है। आगे चलकर यही परंपराएँ प्रश्नों के घेरे में भी आती हैं। यहीं से उपन्यास में परंपरा और परिवर्तन का द्वंद्व जन्म लेता है।

पितृऋण और पूर्वजों के प्रति कर्तव्य-

उपन्यास में माता-पिता और पूर्वजों के प्रति कर्तव्य की भावना भी सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इस भावना को बहुत सरल प्रश्न के माध्यम से व्यक्त किया गया है-

“माँ-बाप का ऋण कभी चुकता है?”

यह प्रश्न अपने भीतर बहुत गहरी भावनात्मकता रखता है। माता-पिता को केवल परिवार के बड़े सदस्यों के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि उनके प्रति जीवनभर की कृतज्ञता का भाव मौजूद है। यहाँ धार्मिक विश्वास और पारिवारिक संवेदना एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। श्राद्ध या पितृ-संबंधी परंपराएँ केवल धार्मिक कर्म नहीं रह जातीं; उनके पीछे अपने पूर्वजों को याद करने और उनके प्रति उत्तरदायित्व महसूस करने की भावना भी है। इस तरह चंद्रकांता सामाजिक परंपरा को मनुष्य की भावनात्मक दुनिया से जोड़ देती हैं।

धार्मिक समन्वय और हिंदू-मुस्लिम सद्भाव-

चंद्रकांता के उपन्यास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष धार्मिक सह-अस्तित्व और मानवीय एकता है। उपन्यास में धार्मिक पहचानें मौजूद हैं, लेकिन वे मनुष्य को दूसरे

मनुष्य से पूरी तरह अलग नहीं करतीं। गली के सामाजिक जीवन में धर्म के साथ-साथ साझा मानवीय संबंधों को भी महत्त्व मिलता है। रत्नी के प्रसंग में ललदेदी की पंक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं-

"शेव छुय थलि- थलि रोज़ान
मो ज़ान क्योन हयोंद त मुसलमान,
त्रुख़ई छुख पननुई ज़ान परज़ान ,
सोई छय साहिबस सत्य असली जान…"

इन पंक्तियों का मूल भाव धार्मिक विभाजन से ऊपर उठकर ईश्वर और मनुष्य की एकता को स्वीकार करना है। इसके साथ ही- "शिव सबमें व्याप्त है। हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद न समझो। पहले अपने-आपको पहचानो, वही शिव के साथ असली पहचान होगी।" यह कथन उपन्यास के सामाजिक दृष्टिकोण को समझने की एक महत्त्वपूर्ण कुंजी है। यहाँ धर्म केवल पूजा या धार्मिक पहचान का विषय नहीं रह जाता। वह मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाली संवेदना का रूप लेता है। "हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद न समझो" जैसी बात उस सामाजिक वातावरण की ओर संकेत करती है जिसमें धार्मिक पहचान से अधिक महत्त्व मानवीय पहचान का है।

इस प्रसंग को केवल सांप्रदायिक सद्भाव की सामान्य बात कहकर छोड़ देना पर्याप्त नहीं होगा। इसकी विशेषता यह है कि धार्मिक समन्वय किसी बाहरी राजनीतिक नारे के रूप में नहीं आता। वह पात्रों के जीवन और उनकी सोच का हिस्सा बनकर सामने आता है।

इस प्रकार चंद्रकांता कश्मीर के साझा सांस्कृतिक जीवन की उस परंपरा को सामने लाती हैं जिसमें अलग-अलग धार्मिक समुदायों के बीच सह-अस्तित्व, संवाद और मानवीय आत्मीयता संभव है।

रत्नी का चरित्र : स्मृति, संवेदना और मानवीय संबंध-

रत्नी का चरित्र उपन्यास के सामाजिक संसार को समझने में बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसके माध्यम से लेखिका यह दिखाती हैं कि एक सामान्य व्यक्ति भी अपने आसपास के लोगों के जीवन में कितनी गहरी जगह बना सकता है। रत्नी के जाने के समय गली के लोगों की भावनाएँ उसके प्रति उनके संबंध को व्यक्त करती हैं। उसके जाने के बाद उसकी हँसी और बातें याद आना इस बात का प्रमाण है कि वह केवल अपने घर तक सीमित नहीं थी। "रत्नी के बाद भी रत्नी के ठहाके गली में गूँजेंगे, रत्नी के मज़ाक, रत्नी की दो टुक बातें।"

यह उद्धरण रत्नी को किसी आदर्श या असाधारण पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करता। वह अपनी हँसी, मज़ाक और सहज व्यवहार के कारण याद की जाती है। यही उसकी सबसे बड़ी मानवीय विशेषता है। रत्नी का महत्व इस बात में है कि वह गली के लोगों के बीच भावनात्मक पुल का काम करती है। उसके जाने पर पैदा हुआ खालीपन वास्तव में उस सामाजिक संबंध के टूटने का अनुभव है जो लंबे समय में बना था। इसलिए रत्नी का चरित्र स्त्री-जीवन के साथ-साथ सामुदायिक जीवन और स्मृति को समझने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

परंपरा और बदलते समय का द्वंद्व

उपन्यास में नई पीढ़ी पुरानी परंपराओं को लेकर प्रश्न उठाती दिखाई देती है। यह सामाजिक परिवर्तन का बहुत स्वाभाविक चित्रण है। अरुन्धती का कथन इस संदर्भ में उल्लेखनीय है- "माई, वक्त बदल रहा है, अब हमें भी कुछ बदलना चाहिए। इन फालतू की रस्मों के लिए रिफार्म करना चाहिए..."

इस कथन में "वक्त बदल रहा है" विशेष ध्यान देने योग्य है। अरुन्धती केवल रस्मों का विरोध नहीं कर रही; वह यह समझ रही है कि समय के साथ समाज की जरूरतें भी बदलती हैं।

यहाँ पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच एक स्वाभाविक संवाद दिखाई देता है। पुरानी पीढ़ी के लिए रस्में परंपरा और पहचान का हिस्सा हैं, जबकि नई पीढ़ी उनमें से उपयोगी और अनुपयोगी को अलग करके देखने की कोशिश करती है।

इस प्रकार उपन्यास परिवर्तन को पूरी तरह परंपरा-विरोधी नहीं बनाता। बल्कि यह प्रश्न उठाता है कि कौन-सी परंपरा जीवन को समृद्ध करती है और कौन-सी केवल बोझ बन चुकी है। यही प्रश्न उपन्यास को केवल अतीत का दस्तावेज न बनाकर सामाजिक परिवर्तन की रचना भी बनाता है।

मृत्यु, स्मृति और जीवन-बोध

रत्नी के जाने का प्रसंग उपन्यास में मृत्यु और जीवन के संबंध को समझने का अवसर देता है। रत्नी भौतिक रूप से गली से चली जाती है, लेकिन उसकी स्मृतियाँ वहीं रह जाती हैं। इसी संदर्भ में प्रश्न उठता है- "मौत को ज़िन्दगी से जीतने की कोशिशों का अनवरत सिलसिला क्या रत्नी के जाने से खत्म हो जाएगा?" इस प्रश्न में मृत्यु को अंतिम सत्य मान लेने के बजाय जीवन की निरंतरता की ओर संकेत है। मनुष्य चला जाता है, लेकिन उसकी स्मृतियाँ और उसके संबंध उसके जाने के बाद भी बने रहते हैं। रत्नी के संदर्भ में यह बात विशेष रूप से दिखाई देती है। उसके जाने के बाद उसके ठहाके, मज़ाक और बातें याद की जाती हैं। इस तरह उसकी अनुपस्थिति ही उसकी उपस्थिति को और अधिक गहरा कर देती है। यही कारण है कि 'ऐलान गली ज़िंदा है' शीर्षक भी इस प्रसंग में विशेष अर्थ प्राप्त करता है। गली जीवित है क्योंकि उसमें रहने वाले लोगों की स्मृतियाँ और उनके संबंध जीवित हैं।

निष्कर्ष

चंद्रकांता का 'ऐलान गली ज़िंदा है' कश्मीर के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को समझने वाली संवेदनशील रचना है। इसकी विशेषता यह है कि लेखिका समाज को किसी एक दृष्टि से नहीं देखतीं। यहाँ धर्म भी है, लोकविश्वास भी; परंपरा भी है, परिवर्तन की इच्छा भी; पारिवारिक संबंध भी हैं और व्यक्तिगत भावनाएँ भी; स्त्री का अकेलापन भी है और सामुदायिक अपनापन भी।

रत्नी का चरित्र इस सामाजिक संसार का एक सुंदर उदाहरण है। उसके जाने पर पूरी गली जिस तरह उसे याद करती है, उससे पता चलता है कि वहाँ के लोगों के संबंध कितने आत्मीय हैं। दूसरी ओर ललदेदी की पंक्तियाँ धार्मिक भेदों से ऊपर उठकर मानवीय एकता की भावना को व्यक्त करती हैं। संस्कारों और पितृऋण से जुड़े प्रसंग समाज की परंपरागत संरचना को सामने लाते हैं, जबकि अरुन्धती का "वक्त बदल रहा है" कहना उसी समाज के भीतर पैदा हो रही नई सोच की ओर संकेत करता है। इस प्रकार उपन्यास में परंपरा और परिवर्तन एक-दूसरे के विरोधी होकर नहीं, बल्कि एक ही सामाजिक जीवन के दो पक्षों के रूप में सामने आते हैं। चंद्रकांता की दृष्टि की खूबी यह है कि वे इन प्रश्नों को किसी उपदेश के रूप में नहीं रखतीं। वे इन्हें रत्नी के जाने, घर के खाली होने, लोगों के आपसी संवाद, धार्मिक विश्वास और छोटी-छोटी सामाजिक स्थितियों के माध्यम से सामने लाती हैं।

अंततः 'ऐलान गली ज़िंदा है' की ऐलान गली केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं रह जाती। वह वहाँ रहने वाले लोगों की स्मृतियों, संबंधों, संस्कारों, संघर्षों और साझा संस्कृति से निर्मित एक जीवित संसार बन जाती है। रत्नी के जाने के बाद भी उसके ठहाके गली में सुनाई देते हैं। यही बात इस उपन्यास के शीर्षक को सबसे गहरा अर्थ देती है। गली इसलिए ज़िंदा है क्योंकि उसके लोगों की मानवीयता और उनकी स्मृतियाँ अब भी ज़िंदा हैं।

संदर्भ-

1.चंद्रकांता, ऐलान गली ज़िंदा है, तृतीय संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2022।

2.वही, पृष्ठ 143

3.वही, पृष्ठ 143

4.वही, पृष्ठ 49

5.वही, पृष्ठ 75

6.वही, पृष्ठ 99

7.वही, पृष्ठ 110

8.वही, पृष्ठ 110

9.वही, पृष्ठ 143

10.वही, पृष्ठ 143

11.वही, पृष्ठ 143

12.वही, पृष्ठ 144

13.वही, पृष्ठ 144

ताईबा आलम

शोधार्थी हिंदी विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय,श्रीनगर